International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 25-06-2019; Accepted: 27-07-2019
www.socialsciencejournal.in
Volume 5; Issue 5; September 2019; Page No. 144-148

मिर्जापुर जिले के बाह्य पर्यटक केन्द्रों का भौगोलिक अध्ययन

मनोज कुमार यादव
शोधार्थी, भूगोल विभाग, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
मिर्जापुर भारत के उत्तर प्रदेश राज्य का जिला है। मिर्जापुर जिला पर्यटन की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण माना जाता है। यहां की प्राकृतिक सुंदरता और धार्मिक वातावरण बरबस लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचती है। मिर्जापुर स्थित विन्ध्याचल धाम भारत के प्रमुख हिन्दू तीर्थ स्थलों में से एक है। मिर्जापुर जनपद/जिला मिर्जापुर में बाह्य पर्यटक केन्द्र जो रेलमार्ग, राष्ट्रीय सड़क मार्ग व वायुमार्गों में मिर्जापुर जनपद में जुड़े हुए हैं। विकसित पर्यटक केन्द्रों का अध्ययन समाविष्ट है, जैसे प्रयागराज (इलाहाबाद), काशी (बनारस), अयोध्या, आगरा, मेरठ, लखनऊ, गोरखपुर, झांसी, खजुराहों तथा विन्ध्यांचल का अभिन्न अंग जो मध्य प्रदेश में स्थित है, वहाँ का प्राकृतिक परिवेश, नदियां, जलासय, जल प्रपात, ऐतिहासिक स्थल, पुरातात्विक स्थल दर्शनीय हैं – चित्रकूट, कालिंजर, ओरछा, अजयगढ़ का किला, रीवा में जलप्रपात, बांधवगढ़ का किला, वाइल्ड लाइफ मुकुन्दपुर, रीवा। भारत का अंतर्राष्ट्रीय मानक समय इलाहाबाद जिले के नैनी के स्थान से लिया गया है, मिर्जापुर "लालस्टोन" के लिये बहुत विख्यात है, प्राचीन समय में इस स्टोन का मौर्य वंश के राजा सम्राट् अशोक के द्वारा बौद्ध स्तुप को एवं अशोक स्तम्भ (वर्तमान में भारत का राष्ट्रीय चिन्ह) को बनाने में किया था, मिर्जापुर के लोगों की भाषा हिन्दी एवं भोजपुरी है।

मूल शब्दः मिर्जापुर, बाह्य पर्यटक केन्द्र, भौगोलिक अध्ययन

प्रस्तावना
पूर्ण सलिला पतित पावनी जान्हवीं के तट पर बसा मिर्जापुर पहले महालक्ष्मी नगर के नाम से जाना जाता था। विन्ध्य महात्म्य (वृहद औशनस उप पुराण) में इस नगर के सम्बन्ध में बताया गया है –

"महालक्ष्मी पूर्वेभागे, महाकाली च दक्षिणे,
महासरस्वती प्रत्येक–कोणे यत्रस्थ संस्थिता।"[1]

अर्थात विन्ध्य क्षेत्र के पूर्व भाग में महालक्ष्मी दक्षिणी भाग में महाकाली तथा पश्चिम में महासरस्वती निवास करती हैं। उपरोक्त श्लोक में महालक्ष्मी का तात्पर्य महालक्ष्मी नगर से ही लगाया जाता है, जो बाद में इसी पर्याय मिर्जापुर के नाम से विख्यात हो गया क्योंकि मिरजा का अर्थ मीर+जा=की पुत्री अर्थात महालक्ष्मी ही है।

कहा जाता है कि महालक्ष्मी ने अपने पति श्री विष्णु भगवान से तारकेश्वर महादेव का महात्म्य सुनकर विन्ध्य क्षेत्र की इसी पावन भूमि पर आकर तपस्या की थी। लक्ष्मी जी ने अन्य–जल छोड़कर दस वर्षों तक घोर तपस्या की परन्तु शंकर जी प्रकट नहीं हुए। तब महालक्ष्मी ने तारकेश्वर मंदिर के उत्तर की ओर थोड़ी दूर पर एक कुण्ड खोदा जो बाद में लक्ष्मीकुण्ड के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसके पश्चात्य उनकी कठोर तपस्या से विचलित होकर भगवान शंकर प्रकट हुये और उन्हें मनोवांछित वरदान दिया था। तभी से इन्हीं महालक्ष्मी के नाम से इस नगर का नाम महालक्ष्मी नगर पड़ा जो बाद में मिर्जापुर के नाम से परिवर्तित हो गया। एक शिलालेख के अनुसार (नगर के बुढ़ेनाथ मंदिर में यह शिला लगा हुआ है), इस नगर को 'मिर्जापुर' के नाम से भी सम्बोधित किया गया है।

कहीं–कहीं (रेवले स्टेशनबस स्टेशन आदि स्थानों पर) इस नगर को मिर्जापुर नाम से भी सम्बोधित किया जाता है, जिसका सम्बन्ध कुछ लोग मीर्जामुकीम नामक मुगल शासक से बताते हैं, जो सन् 1575 ई. में चुनार के किले पर अधिपत्य किया था जिसके कारण इस नगर को मिर्जापुर भी कहा जाने लगा। ब्रिटिश शासन काल में अंग्रेजों ने भी इसी मिर्जापुर को मानकर इसका अंग्रेजी रूपान्तरण कर मिर्जापुर कर दिया जो आज तक इसी तरह अंग्रेजी में लिखा जा रहा है। इस प्रकार नगर के नामकरण के संबंध में कई धारणाएँ प्रचलित हैं। परन्तु धारणाएँ चाहे कोई भी हो। इस नगर का सही व शुद्ध नाम मिर्जापुर ही है। इसका सही और प्रत्यक्ष प्रमाण प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों एवं पुराणों में प्राप्त होता है।

मिर्जापुर के नामकरण के सम्बन्ध में विभिन्न धारणाएँ है। एक शिला लेख के अनुसार, इस आरम्भिक पौराणिक नाम 'गिरजापुर' था। इन नाम के प्रमाण में एक कथा भी जोड़ी जाती है, जिसके अनुसार, पार्वती जी ने शिव की भक्ति प्राप्त करने तथा उन्हें अपना पति बनाने के लिए घनघोर तप किया था, यहाँ तक कि अपना बिल्व सदृश्य स्तन काटकर चढ़ा दिया था। तब शिवजी ने प्रसन्न होकर उन्हें अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार किया था और कहा था, कि आज से जो भी भक्त बेल या बेलपत्र चढ़ाकर मेरी पूजा करेगा वह सहज में ही मेरी भक्त प्राप्त कर सकेगा।[2] कालान्तर में गिरजापुर का नाम बदलकर मिरजापुर हो गया। गि का मि हो जाना सरल स्वाभाविक भी प्रतीत होता है।[3]

शोध विधि
शोध परियोजना को व्यावहारिक स्वरूप प्रदान करने के लिए आंकड़ों का संग्रह निम्न विधियों से किया गया है –

(1) प्राथमिक आंकड़ों के संग्रह के अन्तर्गत साक्षात्कार, अवलोकन, प्रश्नावली, अनुसूची, जनश्रुति, लोकोक्ति अनुभविक विधि, तुलनात्मक विधि आदि का प्रयोग किया गया है।

(2) द्वितीय या गौड़ आंकड़ों का संग्रह–शासकीय अभिलेख, पत्र पत्रिकायें, मानचित्र आरेख, फोटोग्राफ, धरातल पत्रक, शिल्प लेख, ऐतिहासिक सन्दर्श आदि का सहारा लिया गया है। आंकड़ों के सारणीयन में कलकुलेटर, कम्प्यूटर आदि का सहयोग प्राप्त किया गया है। विश्लेषण में प्राकृतिक दृश्यावली को आधार मानकर, प्रशासकीय इकाइयाँ, ग्राम/जनपद/तहसील/विकासखण्ड तथा

जिला मुख्यालय आदि को आधार मानकर विश्लेषणात्मक स्वरूप देने का प्रयास किया गया है।

प्रयागराज (इलाहाबाद)

प्रसिद्ध चीनी यात्री हेनसांग के यात्रावृतांत में वर्णित प्राचीन नगर प्रयाग अब इलाहाबाद के नाम से जाना जाता है। उत्तर भारत के एक विस्तृत क्षेत्र में बहुत पहले 'इला' का राज्य स्थापित होने के कारण 'इलावास' नाम को ही कालांतर में अंग्रेजों ने 'इलाहाबाद' नाम दे दिया। यह शहर गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के तट पर स्थित है। जहां संगम के विस्तृत खुले रेतीले मैदान में प्रतिवर्ष मध्य दिसंबर से फरवरी के प्रथम सप्ताह तक माघ मेले का आयोजन होता है। यह शहर आमतौर से कुंभ नगरी के रूप में भी जाना जाता है।

इलाहाबाद शहर को शिक्षा एवं साहित्य की धरोहर कहा जाए तो अतिश्योक्ति न होगी। मूर्धन्य साहित्यकारों यथा सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, महादेवी वर्मा आदि ने इसी शहर के वातावरण में अपनी साहित्यिक लेखनी को स्थिर आयाम दिया था। इस शहर में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के साथ ही मोतीलाल नेहरू रीजनल इंजीनियरिंग कालेज, इंडियन इंस्टीट्यूट आफ रूरल टेक्नोलॉजी एवं राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय सतत् शिक्षा का केन्द्र बने हुए हैं।

पर्यटन की दृष्टि से इस शहर की महत्ता अब काफी बढ़ गई है। यमुना नदी का केवल आधारित झूला पुल का निर्माण प्रगति पर है तो सरस्वती घाट पर वोट क्लब भी शहर की गरिमा को बढ़ाता है। यहां से व्यापारिक जलयानों का आवागमन भी शुरू हो चुका है।

झांसी

झांसी शहर की ख्याति महारानी लक्ष्मीबाई के नाम से जुड़ कर भारतीय इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। इन पंक्तियों को आज भी बड़े गर्व से हर कोई गाता है। ''चमक उठी सन सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी, बुंदेले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी।'' यह शहर 20.7 वर्गकिलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ था। यहां का नजदीकी हवाई अड्डा ग्वालियर 98 किलोमीटर दूर है। यह शहर मुंबई दिल्ली, रेलमार्ग पर पड़ता है। यहां के लिए मुंबई, दिल्ली, चेन्नई, हैदराबाद, तिरूअनंतपुरम, कोलकाता, इलाहाबाद व लखनऊ इत्यादि सभी प्रमुख नगरों से रेल सुविधा उपलब्ध है। नेशनल हाइवे 25 और 26 से जुड़ा यह शहर अपनी ऐतिहासिक लोकप्रियता के कारण पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है। यहां के लिए खजुराहों, ग्वालियर, छतरपुर, महोबा, देवगढ़, ओरछा, लखनऊ, कानपुर, दतिया, शिवपुरी, फतेहपुर, चित्रकूट, जबलपुर एवं अन्य स्थानों से सीधी बस सेवाएं उपलब्ध है। वर्ष 1857 में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने जिस किले से अंग्रेजों पर गोले बरसाए थे वह आज भी अपनी पूर्व स्थिति में शान से खड़ा अपनी वीरता की गथा सुना रहा है, इस ऐतिहासिक किले को ओरछा के राजा वीरसिंह जूदेव ने वर्ष 1610 में बंगरा की पहाड़ी पर निर्मित करवाया था। 18 वीं शताब्दी में झांसी का किला एवं इसके संपूर्ण क्षेत्र पर मराठों का अधिकार हो गया। मराठों के अंतिम शासक गंगाधर राव थे जिनकी मृत्यु वर्ष 1853 में हुई। इसके पश्चात् रानी लक्ष्मीबाई ने शासन की बागडोर संभाली।

झांसी का किला अपनी अद्भुत कला के लिए दर्शनीय है। इस किले में रखी अष्टधातु की बनी 2 तोंपे कडक बिजली और भवानी शंकर आज भी महारानी लक्ष्मीबाई की वीरता की याद को ताजा करती है। रानी महल का प्राचीन नाम बाई साहब की हवेली था जो कि बाद में रानी महल के नाम से विख्यात हो गया। यह महल शहर के बीचोबीच स्थित है। इसका निर्माण रघुनाथ राव एवं महारानी लक्ष्मीबाई के समय में ही हुआ। महल की रंगबिरंगी पच्चीकारी एवं भीतरी दीवारों पर चित्रकारी उत्कृष्ट कला का नमूना है जो पर्यटकों का मन मोह लेती है इन्हें देख कर प्राचीनतम शिल्पकला के बारे में अद्भुत जानकारी हासिल की जा सकती है। इस महत्व की बड़ी बड़ी दालानें पत्थर पत्थर की कारीगरी के लिए जानी जाती है। इनकी दीवारों पर बनी मेहराबों से प्राचीन शिल्पकला का ज्ञान प्राप्त होता है जो धरोहर के रूप में ज्यों की त्यों अब भी विद्यमान है। वीरांगना महारानी लक्ष्मीबाई ने इसी महल में रह कर अंग्रेजों से लोहा लेने की योजना बनाई थी। अपने सरदारों में अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह की भावना भरने का प्रशिक्षण महारानी ने इसी महल में दिया था। अब इस ऐतिहासिक महत्व में पुरातात्विक विभाग का संग्रहालय है जिसमें बुंदेलखंड स्थित चांदपुर एवं दुधई से एकत्र की गई दुलर्भ मूर्तियों का अनूठा संग्रह है।

आगरा

आगरा शहर अपनी मुगलकालीन भव्य इमारतों के लिए अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त पर्यटन स्थल है। यहां प्रतिवर्ष लाखों की तादाद में पर्यटक आते हैं। यह शहर उर्दू के मशहूर शायर मिर्जा गालिब की जन्मस्थली के रूप में भी जाना जाता है। मशहूर संगीतज्ञ उस्ताद फैयाज खान भी आगरा घराने के संगीत से ही सम्बद्ध थे। यह शहर संगमरमर और चमड़ा उद्योग के लिए विशेष तौर पर जाना जाता है। पर्यटकों की बढ़ती तादाद के कारण यहां होटल व्यवसाय काफी प्रगति पर है। इतना कुछ होते हुए भी यह शहर साफसुथरा शहर नहीं है। क्षतिग्रस्त सड़कें और आवागमन की स्थानीय सुविधाओं की कमी पर्यटकों को जल्दी शहर छोड़ देने के लिए विवश कर देती है। प्रशासन भी इस ओर से लापरवाह ही दिखता है। बहरहाल, आगरा मुगलकालीन संस्कृति से ओतप्रोत एक ऐसा शहर है जहां पर्यटन के लिए आने पर समय और पैसा दोनो वसूल हो जाते हैं।

ताजमहल आगरा का सबसे महत्वपूर्ण दर्शनीय स्थल होने के साथ ही विश्व के 7 प्रमुख आश्चर्यो में से एक है। यह महल वैसे तो एक मकबरा है परंतु अपनी उत्कृष्ट भव्यता के लिए विख्यात है। इसका निर्माण मुगल बादशाह शाहजहां ने अपनी प्रिय बेगम मुमताज की याद में करवाया था। इस मकबरें में मुमताज के साथ ही बाद में शाहजहां को भी दफनाया गया है। अतः एक स्थल पर ही दोनों की कब्रे हैं। ताजमहल का निर्माण वर्ष 1631 में शुरू हुआ था। इसे बनाने में कुल 22 वर्षो का समय लगा था। और 20 हजार श्रमिकों ने अनवरत कार्य करके अपना योगदान दिया। इसके लिए जो नक्शा बना था उसे ईरान के ईशा नामक शिल्पकार ने तैयार किया था। ताजमहल बनाने के लिए इतने ज्यादा श्रमिक इतनी लंबी अवधि तक जहां रहते थे। वह स्थान भी एक छोटे से कसबे 'ताजगंज' के नाम से जाना जाता है। ताजमहल के चारों तरफ लाल पत्थरों की ऊंची चारदीवारी है जिसमें पूर्व, पश्चिम और दक्षिण दिशा में खुलने वाले 3 दरवाजे है। उत्तर दिशा में यमुना नदी बहती है इसलिए उस दिशा में दरवाजा नहीं है। इसका मुख्य गेट दक्षिणी दरवाजा ही है।

ताजमहल की मुख्य इमारत एक विशाल चबूतरे पर बनी है जिसके चारों कोनों पर 4 विशाल मीनारें हैं। इन मीनारों के बीच में ही स्थित है शाहजहां और मुमताज का मकबरा जहां उन्हें 17वीं सदी में दफनाया गया था। इनके मकबरों पर कलात्मक ढंग से पच्चीकारी की गई है। ये मकबरे चारो तरफ से महीन जालियों से घिरे हुए हैं। यहां मखमली घास और सुंदर फूलों से पर्यटकों को एक अलग ही सुकून मिलता है। किला ताजमहल से 2 किलोमीटर की दूरी पर स्थित लालकिला भी पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है। यह किला मुगल बादशाह अकबर ने वर्ष 1563 में बनवाया था। इस किले के भीतर दीवाने खास, नगीना मस्जिद, शीश महल तथा मोती मस्जिद देखने योग्य, इमारते हैं। अन्य प्रमुख इमारतों में दीवाने आम, मच्छी भवन जहांगीर महल,

खास महल आदि भी दर्शनीय है। एतमादुद्तौला इमारत भी ताजमहल की भांति सफेद पत्थरों से निर्मित है जिस पर विभिन्न रंगों के खूबसूरत बेलबूटे हैं। ताजमहल के नक्शानवीसों ने इसी इमारत से प्रेरणा ली थी। इस इमारत का निर्माण मुगल बादशाह जहांगीर की मलिका नूरजहां ने अपने पिता ग्यासुद्दीन बेग की याद में वर्ष 1628 में करवाया था।

फतेहपुर सीकरी

पर्यटन की दृष्टि से फतेहपुर सीकरी एक उत्कृष्ट दर्शनीय स्थल है। आगरा आने के पश्चात पर्यटक यहां न आएं ऐसा हो ही नहीं सकता। यह स्थान आगरा से 37 किलोमीटर दूर स्थित है। इस शहर का नाम यहां मुगल सम्राट अकबर द्वारा वर्ष 1569 में बनवाये गए किले के नाम पर पड़ा। अकबर ने इस स्थान पर किला इसलिए बनवाया था कि वह यहां अपनी राजधानी बना सके और शासन व्यवस्था का सुचारू रूप से यही से संचालन कर सके परंतु इस स्थान पर किला निर्मित हो जाने के पश्चात पानी के स्रोत से कमी आ गई थी। अतः उसे अपना निर्णय बदलना पड़ गया। इस विशाल किले में कई भव्य इमारते हैं जो दर्शनीय है कुछ प्रमुख दर्शनीय स्थल निम्नलिखित हैं –

बुलंद दरवाजा एशिया का सबसे ऊंचा दरवाजा है। इसकी ऊंचाई 176 फुट है। इसके दरवाजों पर प्राचीन कला की भव्य पच्चीकारी देखने लायक है। लाल रंग का यह दरवाजा आज भी पर्यटकों को आकर्षित करता है। इस दरवाजे का निर्माण मुगल सम्राट अकबर ने अपने दक्षिण विजय के दौरान वर्ष 1601 में करवाया था।

हिरन मीनार इमारत पर एक अलग प्रकार की कलाकृति देखने को मिलती है। हिरन के सींगों की भांति उभरे हुए पत्थर देखने में बहुत ही रोमांचकारी लगते हैं। मुख्य किले से थोड़ी दूर पर बनी इस इमारत का प्रयोग अकबर की बेगमें उन हिरनों का शिकार करने के लिए प्रयोग करती थी जिन्हें उनके दरबारी जंगल से पकड़ लाते थे।

दीवानेखास, मुगल सम्राट अकबर अपने नवरत्नों से अकसर मंत्रणा किया करता था। इस हेतु वह दीवानेखास नामक इस इमारत का ही प्रयोग करता था। यह इमारत इतनी ऊँची है कि बाहर से देखने में दोमंजिला प्रतीत होती है परंतु अंदर से एकमंजिला ही है।

पंचमहल 5 मंजिलों की भव्य इमारत है। इस महल का प्रयोग शाम को हवाखोरी करने एवं चांदनी रात का लुत्फ उठाने में होता था। इस महल की विशेषता यह है कि इनमें कुल 176 खंभे है जिनके सहारे यह इमारत खड़ी है। इन प्रत्येक खंभे पर अलग–अलग कलाकृति को दर्शाती पच्चीकारी देखने को मिलती है।

ख्वाब महल कभी सम्राट अकबर का सबसे उपयोगी महल होता था। यों कहिए कि यह उन का शयनगार था। गरमी के मौसम में इस महल को पानी की नालियों और फुहारों के द्वारा ठंड़ा रखा जाता था। इस महल में शाम को नृत्य एवं संगीत की महफिलें लगती थी। इस महल में एक खूबसूरत मंच भी है। कहा जाता है कि इसी मंच पर तानसेन और बैजू बाबरा के मध्य संगीत कार्यक्रम का जोरदार मुकाबला हुआ करता था।

बुलंद दरवाजे से प्रवेश करने पर सामने ही सम्राट अकबर के गुरू शेख सलीम चिश्ती की दरगाह पड़ती है। सफेद पत्थरों से निर्मित इस दरगाह पर आज भी सभी धर्मो के लोग दूर दूर से आते हैं। और यहां की खूबसूरती को निहारते हैं।

विन्ध्यांचल मिर्जापुर

उत्तर प्रदेश का विस्तृत विन्ध्य क्षेत्र अद्भुत व दुर्लभ ऐतिहासिक आध्यात्मिक एवं प्राकृतिक धरोहरों से समृद्ध ऐसा क्षेत्र है, जहाँ आकर पर्यटक एक दूसरी ही दुनिया में खो जाते हैं। इस क्षेत्र को जहाँ एक ओर सुदीर्घ विन्ध्य पर्वत श्रृंखला का सान्निध्य प्राप्त है, तो वहीं ऐतिहासिक किलों–भवनों, गुफाओं भित्ति, चित्रों–शैलाश्रयों, अति प्राचीन जीवाश्मों , मनोरम वन्य जीवन व कल–कल निलादित झरनों नदियों से परिपूर्ण अप्रतिम प्राकृतिक सौन्दर्य धरोहर के रूप में प्राप्त है। इस क्षेत्र में अवस्थित सनातन कालीन आस्था के प्रख्यात केन्द्र श्रद्धालुजनों को प्राचीनकाल से ही प्रेरणा प्रदान करते रहे हैं।

माँ विन्ध्यवासिनी देवी मन्दिरः माँ विन्ध्यवासिनी देवी मंदिर अपने विशिष्ट महात्मय के कारण आस्थावानजनों के लिए प्राचीनकाल से ही श्रद्धा व प्रेरणा का केन्द्र रहा है। चैत्र (मार्च–अप्रैल) एवं आश्विन (सितम्बर–अक्टूबर) के नवरात्र पर्वो पर यहाँ देश–प्रदेश के विभिन्न अंचलों से बड़ी संख्या में दर्शनार्थी आते हैं। मन्दिर परिसर में भक्तजन माँ विन्ध्यवासिनी, महाकाली, महासरस्वती, पंचमुखी महादेव, दक्षिणमुखी हनुमान व यज्ञशाला के दर्शन पूजन करते हैं। मन्दिर में होन वाली आरतियों का भी अपना अलग महत्व और आकर्षण है। आरती चार चरणों में होती है – मंगला आरती – प्रातः 4 बजे, शयन आरती – दोपहर 12.00 बजे, संध्या आरती – सायं 7.30 बजे, निशा आरती – रात्रि 9.30 बजे।

विन्ध्य क्षेत्र की कजली अत्यन्त प्रसिद्ध है, इसका अविर्भाव माँ कजला देवी के साथ जुड़ा रहा है। कजला देवी माँ विन्ध्यवासिनी देवी का ही दूसरा नाम है। माँ विन्ध्यवासिनी देवी के मंदिर में झरोखों से दर्शन कर कजली टीका लगाने की परम्परा आज भी देखने को मिलती है। प्रत्येक वर्ष के ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी से माँ विन्ध्यवासिनी जी के मन्दिर में क्षेत्र के प्रख्यात कजली गायक एकत्रित होकर कजली के माध्यम से अपनी आराधना प्रारंभ करते हैं जो वर्षा ऋतु के अंत तक चलती है।

माँ अष्टभुजा देवी मन्दिरः माँ अष्टभुजा देवी मन्दिर विन्ध्यवासिनी देवी के मन्दिर से मात्र तीन कि.मी. की दूरी पर सुरम्य विन्ध्य पर्वत पर अवस्थित है। मान्यता है कि जब यशोदा के गर्भ से पैदा हुई कन्या को कंस ने देवकी की आठवीं संतान समझकर पूर्व मे सुनी हुई दैवीय आकाशवाणी से भयभीत होकर मारने के उद्देश्य से भूमि पर पटकना चाहा, तो वह बालिका उसके हाथ से छूटकर आकाश मार्ग की ओर चली गई और बाद में अष्टभुजा पर्वत पर शक्ति के रूप में अवतरित हुई। यहाँ से विन्ध्यांचल नगर का मनोरम विहंगम दृश्य देखने को मिलता है। मन्दिर परिसर एवं आसपास माँ अष्टभुजा मन्दिर के साथ ही अन्य अनेक मन्दिर व स्थान दर्शनीय है।

सीता कुण्डः माँ अष्टभुजा मन्दिर के निकट एक जल स्रोत है, जिसका जल एक कुण्ड में एकत्रित होता है। मान्यता है कि इस स्थान पर सीताजी ने स्नान किया था, जिससे इसका नाम सीता–कुण्ड पड़ा। कुण्ड के पास प्रभु हनुमान, राम, सीताजी एवं माँ दुर्गाजी की मूर्तियाँ स्थापित है। माँ अष्टभुजा मन्दिर के समीप ही देखने को मिलते हैं भैरव भैरवी मन्दिर, भैरव कुण्ड, माँ काली मन्दिर पाषाण पर उत्कीर्ण अनूठा श्रीयन्त्र, श्रीराम चरण पादुका आदि।

काली खोहः यह स्थान विन्ध्य पर्वत पर स्थित है। यहाँ पर माँ काली का भव्य मन्दिर है। कहा जाता है कि राक्षसों से त्रस्त होकर जब देवताओं ने भगवती पार्वती की स्तुति की तब देवताओं की करूण कथा को सुनकर भगवती राक्षसों पर अत्याधिक क्रोधित हो गई, जिसके कारण माँ का वर्ण काला पड़ गया। इसी से भगवती माँ काली, चण्डी, चामुण्डा एवं चण्डिका आदि नामों से प्रसिद्ध हुई।

त्रिकोण परिक्रमाः शास्त्रों में विन्ध्य शक्तिपीठ की त्रिकोण परिक्रमा

का असीम महत्व बताया गया है। यही कारण है कि माँ विन्ध्यवासिनी के दर्शन के पश्चात भक्तगण काली खोह, अष्टभुजा, महावीर मन्दिरों आदि की परिक्रमा यात्रा करते हैं। काली कुण्ड के पवित्र जल में स्नान का भी प्राविधान है। महात्मा कर्णगिरि की बावली का दर्शन करते हुए इस परिक्रमा की समाप्ति हो जाती है। विन्ध्यांचल की रक्षा के लिए वामन भैरव सिंह स्थित है। इनके पूर्व में आनन्द भैरव, पश्चिम में सिद्धनाथ, दक्षिण में कपाल भैरव एवं उत्तर में रूद्र भैरव स्थापित है। नगर के विभिन्न स्थानों पर लाल भैरव, बटुक भैरव, काल भैरव के मंदिर हैं।

बूढ़ेनाथ मंदिरः नगर के मध्य त्रिमुहानी बाजार के समीप बूढ़ेनाथ मुहल्ले में स्थित इस मन्दिर में शिवलिंग, हनुमानजी एवं अन्य देवी देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित हैं। पौराणिक गाथाओं के अनुसार इस मन्दिर में स्थापित शिव लिंग की तारतम्यता वाराणसी स्थित बाबा विश्वनाथ जी के पुराने मन्दिर से है।

नागकुण्डः इसकी गणना नगर के प्राचीनतम स्थानों में होती है। नागवंशीय राजाओं द्वारा निर्मित इस बावन घाटों की बाली (तालाब) पर नागपंचमी के दिन स्नान का विशेष महत्व माना जाता है।

नारद घाटः पुराण वर्णित इस घाट का बहुत महत्व बतलाया गया है। प्राचीनकाल में इसका नाम कर्मा नारायण घाट था।

तारकेश्वरनाथ मन्दिरः कचहरी के पास स्थित तारकेश्वरनाथ मन्दिर के बारे में जन श्रुति है कि माँ लक्ष्मी जी की भगवान विष्णु से तारकेश्वरनाथ जी का महात्म्य सुनकर यही तपस्यालीन हुई थी। घनघोर तपस्या के उपरांत भी जब शंकर जी प्रकट नहीं हुए तो महामाया ने तारकेश्वर के उत्तर की ओर एक कुण्ड खोदा जो बाद में लक्ष्मी कुण्ड के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

रामेश्वर महादेव मंदिरः यह मदिर रामगया घाट की समीप स्थित है। मान्यतानुसार भगवान राम ने पितृ तर्पण कर इस शिवलिंग की स्थापना की थी। यहाँ श्रावणकाल में जलाभिषेक की परम्परा है। समीप ही एक और शिवलिंग स्थापित है, जिसकी स्थापना जनश्रुति के अनुसार भरत जी द्वारा मानी जाती है।

तारादेवी मन्दिरः नगर के राम गया घाट पर श्मशान क्षेत्र में स्थित इस मन्दिर की अत्यधिक मान्यता है। यहाँ भगवती तारा की मूर्ति स्थापित है। कहा जाता है कि राम गया घाट पर भगवान श्रीराम द्वारा पितरों का तर्पण किया गया था।

वामनदेव मन्दिरः विन्ध्यांचल के निकट ओझला नदी एवं गंगा के संगम पर कंतित ग्राम के निकट स्थित भगवान विष्णु के इस मंदिर में उनके दशावतारों में वामन रूप की दुर्लभ प्रतिमा दर्शनीय है।

गेरूआ तालाबः यह स्थान नगर के 14 कि.मी. दूर विन्ध्य पर्वत पर स्थित है। यहाँ एक प्राचीन मन्दिर में भगवान श्रीकृष्ण की मूर्ति स्थापित है। मन्दिर के निकट गेरूआ रंग की मिट्टी मिलती है। यहाँ एक सुन्दर जलाशय भी है।

मोतिया तालाबः गेरूआ तालाब से 2 किमी. पश्चिम की ओर विन्ध्य पर्वत के मनमोहक वातावरण में यह तालाब स्थित है। दो भागों में विभक्त सुन्दर जलाशय, भगवान शंकर एवं हनुमान जी के प्राचीन मन्दिर यहाँ के आकर्षण हैं।

अकोढ़ी मन्दिर कंकाल काली मन्दिरः विन्ध्यांचल के पश्चिम में 14 किमी दूर अकोढ़ी ग्राम में स्थित शिवमंदिर, कंकाल काली मन्दिर की स्थापना मान्यतानुसार अक्रोध मुनि के द्वारा मानी जाती है।

बदेवरानाथ शिवधामः विन्ध्यांचल इलाहाबाद मार्ग पर 35 कि.मी. दूर जिगना स्थान के पास स्थित इस प्रसिद्ध धाम पर पौष मास की तेरस एवं महाशिवरात्रि पर विशाल मेले लगते हैं।

खैरा शिवधामः विन्ध्यांचल इलाहाबाद मार्ग पर 42 कि.मी. दूर जिगना स्थान के पास इस प्राचीन शिव मंदिर में महाशिवरात्रि, कार्तिक पूर्णिमा एवं प्रत्येक सोमवार को बड़ी संख्या में श्रद्धालुजन आते हैं।

कंतित शरीफः नगर के कंतित नामक स्थान पर स्थित कंतित शरीफ में न केवल मुस्लिम समुदाय, अपितु सभी सम्प्रदायों के लोग दर्शन हेतु जाते हैं। यहाँ अजमेर शरीफ के ख्वाजा चिश्तीजी के भांजे इस्माइल चिश्तीजी की दरगाह है। रजब (मुस्लिम कलेण्डर) के चाँद की 5–6–7 तारीखों को उर्स मनाया जाता है। ऐसी मान्यता है कि यदि किसी कारणवश दर्शनार्थी अजमेर की यात्रा न कर सके, तो उन्हें यहाँ की दरगाह का दर्शन करना चाहिये, जिससे अजमेर दर्शन के समान ही फल प्राप्त होता है।

अन्य दर्शनीय स्थलः विन्ध्येश्वर मन्दिर, कुमुद हनुमान, कामाधदेवी क्षेत्रपाल, चितवा खोह, लाल भट्ट की बावली, एक दन्त गणेश, सप्त सरोवर, प्रतापभानु के किले के अवशेष, शिव खोह, भ्रामरी, विरोधिनी, वीरभद्र, संकटमोचन हनुमान, रावण की तपस्थली, साक्षी गोपाल मन्दिर, शेषशायी विष्णु, बंगाली बाबा की समाधि, पातालपुरी का सिद्धकाली मन्दिर, एकादश रूद्र मन्दिर, मत्स्येन्द्र कुण्ड, गोरक्ष कुण्ड माँ आनन्दमयी आश्रम, राम जानकी मन्दिर, अक्षोभ्य शिव मंदिर, संकटादेवी मंदिर, शीतलादेवी मंदिर आदि।

मीरजापुरः पतित पावनी गंगा एवं विन्ध्यांचल जैसे विख्यात शक्तिपीठ स्थल के सान्निध्य से गौरवान्वित मीरजापुर नगर आस्था, शिल्पकला और परम्पराओं का संगम केन्द्र है। गंगा तटवर्ती, अलंकृत घाट, 1891 में गोथिक शैली में अत्यन्त कलात्मक ढंग से निर्मित आकर्षक घंटाघर, पुराने देवालय एवं अन्य ऐतिहासिक स्थान मीरजापुर के गौरवशाली इतिहास के साक्षी है। पीतल, चीनी–मिट्टी, कालीन दरी आदि की कलात्मक हस्तकला इस क्षेत्र की विशिष्ट रही है। लोक गायन के क्षेत्र में दूर–दूर तक प्रसिद्ध कजरी शैली की यह उद्भव केन्द्र माना जाता है।

गुरूद्वारा अहरौरा तथा छोटा मीरजापुरः वाराणसी–सोनभद्र मार्ग पर मीरजापुर से 52 कि.मी. दूर अहरौरा एवं चुनार वाराणसी मार्ग पर मीरजापुर के नारायणपुर विकासखण्ड में 55 किमी. दूर स्थित छोटा मीरजापुर में गुरू तेग बहादुरजी प्रयाग से वाराणसी जाते हुए माँ विन्ध्यवासिनी देवी के दर्शन के क्रम में पधारे थे।

गुरूद्वारा भुइली साहबः वाराणसी से 30 कि.मी. की दूरी पर स्थित भुइली स्थान पर श्री गुरू तेग बहादुर जी ने पटना जाते हुए प्रवास किया था। लोअर खजुरी जलाशय – 10 किमी. , टांडा जलप्रपात – 14 किमी., विंढंम जलप्रपात – 16 किमी., सिरसी जलप्रपात – 45 किमी., देवदरी जलप्रपात – 120 कि.मी.।

चुनारः वाराणसी से 40 किमी. एवं मिर्जापुर से 35 किमी. की दूरी पर गंगा तट पर अवस्थित चुनाव गौरवशाली इतिहास का साक्षी रहा है। वामन विष्णु आदि जैसे पौराणिक कथानकों से जुडे रहे इस स्थान का प्राचीन साहित्य में चरणादि नैनागढ़ आदि नामों से उल्लेख मिलता है। यहाँ का विशिष्ट आकर्षण है गंगा तटवर्ती व

पहाड़ी पर निर्मित भव्य किला, जिसे राजा विक्रमादित्य ने अपने भाई राजा भर्तहरि के लिए बनवाया था। किले के परिसर में ही राजा भर्तहरि की समाधि भी है। किले में स्थित सोनवा–मण्डप के सम्बन्ध में किवदन्ती है कि कन्नौज के राजा सहदेव ने सन् 1029 ई. में इस किले को अपनी राजधानी बनाया था। राजा ने अपनी बेटी सोनवा के लिए यह घोषणा की थी कि जो भी उसे युद्ध में पराजित कर देगा, उससे वह अपनी बेटी का विवाह कर देंगे। इस लड़ाई में 52 राजा अपनी हार मानकर किले मे कैद हो गए। इसी स्मृति मे राजा ने किले के भीतर बावली के पास 52 खम्भों की छतरी बनवाई। अन्त में महोबा के वीर ऊदल ने वहाँ के राजा को परास्त कर सोनवा को अपने भाई आल्हा के साथ शादी करवाकर ले गए। किले में ही वारेन हेस्टिंग्स का आवास एवं सूर्य घड़ी भी है। जलवायु की दृष्टि से भी चुनार एक आदर्श स्थान है।

सिद्धनाथ की दूरीः यह रमणीक स्थल चुनार से 20 किमी. की दूरी पर स्थित है। 300 फीट की ऊँचाई से गिरता हुआ जल प्रपात एवं जल प्रपात के दूसरी ओर स्थित सन्त सिद्धनाथ जी की समाधि यहाँ के आकर्षण हैं। समीप ही शक्तेशगढ़ का किला है, जिसे 16वीं सदी में शक्तेश सिंह ने निर्मित कराया था। अवकाश के क्षणों में व्यतीत करने के लिए यह मनोरम स्थल हैं।

दुर्गा खोहः चुनार रेलवे स्टेशन से मात्र एक किमी की दूरी पर दक्षिण पश्चिम दिशा में स्थित यह मनोरम स्थान एक छोटी जल धारा झिरना नाला के तट पर है। यहाँ एक प्राकृतिक गुफा में देवी दुर्गाजी का प्राचीन मन्दिर है, जिसके कारण ही यह स्थान दुर्गा खोह के नाम से प्रसिद्ध है। प्रख्यात पुरातत्वविद श्री ए. कनिंघम ने 1883–84 में इस स्थान की खोज की थी और गुफा की दीवार पर अंकित गुप्तकालीन शैल चित्रों व लघु अभिलेखों से परिचित कराया था।

बड़ा गाँवः यह स्थान लगभग 2300 वर्ष पुरानी पत्थर की खनन स्थली के रूप में प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि चुनार रेलवे स्टेशन से करीब 2 किमी. की दूरी पर स्थित इस स्थान के बलुआ पत्थरों के द्वारा अशोक कालीन स्तम्भों का निर्माण हुआ था। यहाँ के कुछ पाषाण खण्ड इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि उन पर तीसरी शती ईसा पूर्व काल के दुर्लभ शिलालेख देखने को मिलते हैं। पुरातत्व में रूचि रखने वालों के लिए यह एक महत्वपूर्ण स्थल है।

सोनभद्रः मीरजापुर से 85 किमी की दूरी पर स्थित सोनभद्र पर्यटन आकर्षणों से अत्यन्त समृद्ध क्षेत्र है। विस्तृत भू–भाग में फैले इस परिक्षेत्र मे स्थान–स्थान पर देखने को मिलते हैं पुरातात्विक, ऐतिहासिक, आध्यात्मिक एवं नदियों प्रपातों और वन्य जीवन से परिपूर्ण अप्रतिम प्राकृतिक सौन्दर्य सम्पन्न स्थान। सोन, कर्मनाशा, चन्द्रप्रभा, रिहन्द, कनहर, रेणु, घाघर बेलन जैसी नदियों एवं खनिज सम्पदाओं और करमा जैसे लोकनृत्य इस क्षेत्र के धरोहर हैं।

दर्शनीय स्थलः बरैला शिव मंदिर, परासी (शहीद उद्यान), गौरी–शंकर (शिव मंदिर), महुअरिया (वन्य जीव विहार), शिवद्वार (उमा–महेश्वर की ग्यारहवीं शताब्दी की लास्य शैली की ऐतिहासिक प्रतिमा), मुक्खा (जल प्रपात, गुफा चित्र), बरैला (शिव मंदिर), पंचमुखी (गुफाचित्र सोनघाटी, शिवमंदिर), मऊ (संग्रहालय, बुद्ध मन्दिर, एकमुखी व सहस्र शिवलिंग), विजयगढ़ (दुर्ग, मीरान शाह की मजार, राम सागर तालाब), मारकुण्डी (लोरिक पाषाण स्तम्भ, सोन व्यू), सलखन (विस्तृत क्षेत्र में फैले अति प्राचीन जीवाश्म), चोपन (गोठानी के शिवालय), कुडारी देवी, अगोरी दुर्ग, घोरावल (विष्णु मूर्ति, शक्तिनगर (एन.टी.पी.सी. सिंगरौली, ज्वालादेवी), रेनूकूट (हिंडालको, लोटस टेम्पल, रेणुकेश्वर महादेव, श्रीराम मन्दिर, राधाकृष्ण मन्दिर), पिपरी (रिहन्द बांध, गोविन्द वल्लभ पंत सागर का प्राकृतिक दृश्य) ओबरा (विद्युत परियोजना)।

निष्कर्ष

मिर्जापुर जनपद के पर्यटन स्थलों में आवासीय इकाइयाँ तथा राज्य के विभिन्न स्थलों पर 06 कैफेटेरिया और मार्ग सुविधायें हैं। पर्यटन निगम के होटलों तथा होटलों में विशेष सुविधा तथा मनोरंजन की विशेष सुविधा उपलब्ध है। पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से मिर्जापुर जनपद को रीवा जनपद विन्ध्य प्रदेश की खजुराहो, ग्वालियर, बनारस को रेल परिवहन से जोड़ा गया है तथा ओरछा और राजवाड़ा (इंदौर) में ध्वनि–प्रकाश कार्यक्रम शीघ्र ही होने वाला है। प्रदेश में पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए जलक्रीड़ा सुविधाओं के दृष्टि से बाणसागर तथा स्थानीय प्राकृतिक जलप्रपात केन्द्रों से लिंक किया गया है। गंगा का यमुना नदियों में वोट क्लब है। पर्यटकों के आगमन की सुविधा के लिए इलाहाबाद, बनारस, आगरा, झाँसी, अयोध्या मार्ग पर वातानुकूलित पर्यटन बसों का संचालन किया जा रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. डॉ. अग्रवाल, कन्हैयालाल, विन्ध्य क्षेत्र का ऐतिहासिक भूगोल, सुषमा प्रेस, सतना, पृष्ठ 33
2. भाटिया, ए.के. (1978), टूरिज्म इन इंडिया स्टर्लिंग, दिल्ली, पृष्ठ 112
3. डॉ. अर्जनदास केसरी, विन्ध्य क्षेत्र का सांस्कृतिक वैभव, पृष्ठ 49